CDO/Lent/Cir/2017 01/03/17

चालीसा काल में धर्माध्यक्ष जी का सन्देश 2017

प्रिय भाइयो और बहनो

प्रभु येसु की जय और माता मरियम को प्रणाम!

चालीसा काल मौन और प्रभु का वचन सुनने का पुण्य समय है। अपने कानों को प्रभु वचन पर लगाते हुए, परहेज और उपवास करते हुए दूसरों की भलाई करना और प्रभु येसु के दुःखभोग, मरण एवं पुर्नरूत्थान को आत्मसात करने का पुण्य अवसर है। चालीसा काल सब को पश्चात्ताप द्वारा पुनः ईश्वर के पास आने का सुनहरा मौका है। ''तुम मेरे पास लौट आओ, तो मैं तुम्हारे पास लौटूंगा।'' (मलाकी 3: 7) अपने कठोर हृदय को बदलकर सहृदय से ईश्वर को अपनाओ। ईश्वर हमारा सृष्टिकर्ता है, वह हमारा दयालु पिता है। ईश्वर की दया ही शान्ति, आनन्द और प्रेम स्रोत है। ''धन्य हैं वे जो दयालु हैं, उनकर दया की जायेगी।'' (मत्ती 5: 7)

ईश्वर की दया को उडाव पुत्र के दृष्टान्त से समझने की कोशिश करे। जिस प्रकार उडाव पुत्र अपने पिता के पास लौट आया और उसे पिता ने अपने बाहों में लिया इसी प्रकार हम भी अपने पापों पर पश्चात्ताप करते हुए पिता ईश्वर के पास आकर उनके अनोखे प्रेम का अनुभव करें। प्रभु ने कहा है : जाओ और इसका अर्थ समझो कि : मैं बलिदान नहीं दया चाहता हूं। मैं धर्मियों को नहीं पापियों को बुलाने आया हूं।'' (मत्ती 9: 13) क्योंकि सबों ने पाप किया और सब ईश्वर की महिमा से वंचित किये गये। (रोमी 3:23) ''पश्चाताप और पाप स्वीकृति में तुम्हारा कल्याण है।'' (इसायाह 30 :15)

हम लोग एक तरफ प्रभु येसु को सुनना चाहते हैं दूसरी तरफ दूसरों की बुराई करते और उनपर तरह –तरह के दोष लगाते जाते हैं। ''इसलिए यदि मैं – तुम्हारें प्रभु और गुरू ने तुम्हारे पैर धोये हैं, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोने चाहिए।'' योहन 13: 14) यह हम ख्रीस्तीयों के लिए एक बड़ी चुनौती है हम प्रभु की तरह कर सकें दूसरों के पैर धो सकें। कम से कम चालीसे में हम दूसरों की बुराई करना छोड़ दें। ''दूसरों पर आरोप नहीं लगाओ और तुम पर भी आरोप नहीं लगेगा क्योंकि जिस नाप से तुम दूसरों के लिए नापते हो उसी नाप से हमारे लिए भी नापा जायेगा।'' यदि अपने आँखों में तिनका है तो हम दूसरों के आंख का डण्डा नहीं निकाल सकेंगे।'' (मत्ती 7: 1-4) इसलिए इस चालीसा में हम दूसरों की बुराई नहीं करे। प्रभु येसु कहते हैं, पापियों को दण्ड देने नहीं बल्कि उनको बचाने आया हूं।'' (यो. 3: 17)

ख्रीस्तीय जीवन में हमें प्रभु येसु की तरह अपना जीवन दूसरों के लिए खाली करना है । वह दास बन गये और मनुष्यों के समान बनकर अपने को और भी दीन-हीन बना लिया और कूस मरण तक आज्ञाकरी बनकर अपने को और भी दीन बना लिया।'' (फिलिप्पियों 2 : 7)'' प्रभु येसु धनी थे किन्तु वे हमारे लिए निर्धन बने जिससे वह हमें निर्धनता से धनी बना सकें। (2 कुरिन्थियों 8:9) इस प्रकार हमारा बुलावा दूसरों की सेवा के लिए है।'' वह सेवा कराने नहीं बल्कि सेवा करने आये। हम अपने घमण्ड को त्यागकर अपने स्वार्थ को प्रभु येसु के कूस पर चढ़ा दे ताकि हम प्रभु की तरह नव जीवन प्राप्त करें। हम अपने लिए नहीं बल्कि प्रभु के लिए जीये जो हमारे लिए मरे और जी उठे। अब मैं नहीं प्रभु येसु मुझमें जीता है। '' (गलातियों 2: 20)

इस प्रकार हम प्रभु को सुने और प्रभु को प्यार करें। उनकी शक्ति हमें परिवर्तित करें। हम भी दया के माध्यम बने। हम प्रभु के जीवन जल के स्रोत बने और सम्पूर्ण विश्व को उनके प्रेम से सिंचित करे और धरती को फलदायी और समृद्ध करें। हम एक नया हृदय धारण करे।'' एज़ेकिएल 36: 26) हम भी सूखी हड्डियों में जीवन भर दें। (एजेकिएल 37)

यदि ईश्वर का आत्मा सचमुच आप लोगों में निवास करता है तो आप शरीर की वासनाओं से नहीं, बल्कि आत्मा से संचालित हैं। (रोम 8:9)

चलीसा काल हमें मनपरिवर्तन एवं जीवन के बदलाव के लिए आह्वाहन करता है। हम अपनी बुरी आदतों को उखाड़ फेंके और सब प्रकार की बुराईयों से बचे रहें। दूसरों को क्षमा करें क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहें हैं। हम उनके लिए प्रार्थना करें जो अपने समाज को नष्ट कर रहे हैं। प्रभु येसु हमारा मालिक है, वह हमारा जीवन है। ''मैं पुर्नरूत्थान और जीवन हूं, जो मुझमें विश्वास करता है, वह मरने पर भी सदा जीवित रहेगा।'' (योहन 11:25)

मैं आप सभी को पुर्नजीवित प्रभु का आशीर्वाद और शुभकामनाएं अर्पित करता हूं।

पीटर परापुल्लील,
धर्माध्यक्ष, झांसी